भूमिका

प्रख्यात ब्रिटिश नाटककार विलियम शेक्सपियर ने ट्रैजिडि और कॉमेडी नाटक मिलाकर तीन दर्जन से अधिक नाटक लिखे। उन नाटकों की लोकप्रियता के चलते उनका अनुवाद विश्व की लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में हुआ और मंचन लगभग सभी देशों में। उन्होंने अपने पूर्ववर्ती और समकालीन सभी नाटककारों से अलग रास्ता अख़्तियार करते हुए पूर्व-प्रचलित नाट्यलेखन संबंधी रूढ़ धारणाओं का उल्लंघन कर नए मानक स्थापित किए। क्योंकि वे लेखक के साथ-साथ अभिनेता, निर्देशक और नाटक कंपनी के मालिक भी थे। इसलिए उन्हें अभिनय और मंच की सीमाओं की अच्छी समझ थी। रूढ़िओं के उल्लंघन से जहां उनके नाटकों में कथ्य को विस्तृत फ़लक मिला तो अभिनय और मंच की सीमाओं की समझ से नाटक की संरचना को अपेक्षित संतुलन मिला। संसार का कोई ऐसा भाव और स्थितियाँ नहीं बचीं जो बेहद सधे हुए ढंग से उनके नाटकों में किसी-न-किसी रूप में प्रतिबिम्बित न हुई हों। अपने कथ्य और शिल्प के कारण उनके नाटक आज भी प्रासंगिक माने जाते हैं। शेक्सपियर के कृतित्व पर समग्रता से विचार करने पर वे विश्व के किसी भी नाटककार से ऊपर खड़े प्रतीत होते हैं। उनके नाटकों की विशेषताओं और लोकप्रियता के चलते, यूरोप में सिनेमा के विकास के शुरुआती चरण में ही उसे फिल्मांकित करने का सिलसिला शुरू हुआ। जल्दी ही दूसरे महाद्वीप के देशों में भी उन नाटकों का फिल्मांकन होने लगा। इसी क्रम में भारत में भी सिनेमा के मूक युग में ही उनके नाटकों का फिल्मांकन शुरू हुआ। आज भी विश्व भर में शेक्सपियर के नाटकों पर आधारित या उससे प्रभावित होकर फिल्में बन रही हैं। भारत में अब तक उन नाटकों पर आधारित या प्रभावित होकर बड़ी संख्या में फिल्में बन चुकी हैं। इस स्थिति में स्वाभाविक ही मन में प्रश्न उठता है कि भारतीय समाज की अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं और विविधताओं के बावजूद आज भी शेक्सपियर के नाटक फिल्म-निर्देशकों को क्यों आकर्षित करते हैं; उन नाटकों पर बनी फिल्मों में स्थितियों का रूपान्तरण किस प्रकार किया गया है तथा उनकी सफलता या असफलता की स्थिति क्या है? इन प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए यह अपेक्षित था कि उपरोक्त बातों का अध्ययन किया जाए जो हिन्दी में अब तक नहीं हुआ है। हाँ, अंग्रेजी में कुछ कार्य अवश्य हुए हैं लेकिन विषय की विशालता और नवीनता के सापेक्ष वह अध्ययन पर्याप्त नहीं माना जा सकता है। इसलिए इस विषय ने विषय मुझे शोध के लिये आकर्षित

किया। यह विषय मेरे रूचि के अनुकूल भी है। इन कारणों से मैंने इस विषय का चुनाव शोध के लिए किया। इस शोध से निश्चय ही ज्ञान-क्षेत्र में वृद्धि होगी और लोगों को ऐसी फिल्मों के वास्तविक स्वरूप की सही जानकारी मिलेगी जो अन्य संदर्भों में भी चिंतन और कार्य के लिए उपयोगी होगी, यही इस शोधकार्य का उद्येश्य है।

किसी साहित्यिक कृति पर दो तरीके से फिल्म बनाई जाती है – उस कृति पर आधारित या उससे प्रभावित होकर। भारत में शेक्सपियर के नाटकों पर दोनों तरीके से फिल्में बनाई गई हैं। प्रभावित होकर बनने वाली फिल्मों की संख्या, नाटकों पर आधारित फिल्मों की संख्या से अपेक्षाकृत बड़ी है। लेकिन ऐसी फिल्मों में नाटक पूरी तरह से प्रतिबिंबित नहीं होता है। सीमित समय और संसाधनों को ध्यान में रखते हुए मैंने इस शोधकार्य को उन फिल्मों तक केंद्रित रखा जो शेक्सपियर के नाटकों पर बनी हुई मानी जाती हैं। यह चुनाव इस शोध की सीमा कहा जा सकता है।

इस शोधकार्य में ऊपर वर्णित प्रश्नों का उत्तर, विवरणात्मक-गुणात्मक शोध प्रविधि के अंतर्गत साहित्यावलोकन, अवलोकन, साक्षात्कार आदि से प्राप्त प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़ों को अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि के द्वारा विश्लेषित करके निष्कर्ष रूप में प्राप्त किया गया है, जो इस प्रबंध के चौथे और अंतिम अध्याय, उपसंहार, के अंतर्गत संकलित है। इस लघुशोध-प्रबंध में कुल चार अध्याय हैं।

पहला अध्याय : इस अध्याय का नाम है, 'शेक्सपियर और सिनेमा की दुनिया'। यह चार भागों में विभक्त है, जिनमें क्रमशः शेक्सपियर का जीवन, उनका रचना संसार, उनकी रचनात्मक विशेषताएँ और सिनेमा के पर्दे पर उनके नाटकों का आगमन और उसकी स्थिति का संक्षिप्त वर्णन संकलित है।

दूसरा अध्याय : इस अध्याय का नाम है, 'शेक्सपियर के नाटकों पर बनी हिन्दी फिल्में'। जैसा कि अध्याय के नाम से ही स्पष्ट है, इसमें शेक्सपियर के नाटकों पर बनी हिन्दी फिल्मों का वर्णन है। अध्ययन के दौरान फिल्मों की जो विशेषताएँ मैंने देखी उस आधार पर उन्हें तीन समूहों में बांटा गया, जिससे अध्ययन सुविधाजनक हो गया। वे तीन समूह ही इस अध्याय के प्रथम तीन भाग हैं। चौथे और अंतिम भाग में शेक्सपियर के नाटकों से प्रभावित हिन्दी फिल्मों के विषय में जानकारी

दी गई है। शेक्सपियर के नाटकों से प्रभावित हिन्दी फिल्मों का अध्ययन, इस शोध की सीमा में नहीं था लेकिन शेक्सपियर का संबंध इनसे है, इसलिए मैंने इस विषय में अतिसंक्षिप्त चर्चा की है।

तीसरा अध्याय : इस अध्याय का नाम है 'शेक्सपियर के नाटकों पर बनी हिन्दी फिल्मों का विवेचन'। इसमें अध्ययन के दौरान प्राप्त हुई सात हिन्दी फिल्मों का नाटक के सापेक्ष विश्लेषण, फिल्म के नाम से ही सात भागों में बाँटकर किया गया है। अध्याय का अंतिम भाग 'नाटकों का फिल्मांतरण' नाम से है। इस भाग में शेक्सपियर के नाटकों पर अब तक बनी, अनुपलब्ध और उपलब्ध सभी हिन्दी फिल्मों के निर्माण के कारण और सफलता-असफलता की पड़ताल की गई है तथा भविष्य की स्थिति का अनुमान लगाने का प्रयास किया गया है।

चौथा अध्याय : यह संपूर्ण शोध कार्य का उपसंहार रूप में है। जिसमें उपरोक्त तीनों अध्याय में वर्णित तथ्यों को क्रमबद्ध, संक्षिप्त और सारगर्भित रूप में लिखा गया है।

उपसंहार के बाद प्रबंध में संदर्भ संकलित है जिसमें शोध में उपयुक्त आधार ग्रंथों, सहायक ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाएँ, शब्दकोश और इंटरनेट लिंक को मानक नियमों के अनुसार उल्लेखित किया गया है। संदर्भ के बाद परिशिष्ट दिया गया है। यह उन सामग्रियों का संकलन है, जिन्हें प्रबंध में सीधे तौर पर उल्लेखित नहीं किया जा सकता था। लेकिन उनका उपयोग शोधकार्य में हुआ है तथा वे कार्य की मौलिकता को प्रमाणित करने में सहायक हैं।

मैं अपने जनक-जननी के आशीर्वचनों का संबल लेकर इस शोधकार्य में संलग्न हुआ तथा इसमें विभिन्न व्यक्तियों का विभिन्न स्तर पर सहयोग मिला। मेरे शोध निर्देशक प्रो॰ सुरेश शर्मा के समुचित मार्गदर्शन के बिना यह कार्य कतई संभव नहीं था। मैं श्रद्धेय के प्रति चिर कृतज्ञता ज्ञपित करता हूँ। विभाग के शिक्षकों एवं कर्मियों से शोध के संदर्भ में प्राप्त सलाह सहयोगी साबित हुई। नाट्यविद देवेंद्र राज अंकुर और फिल्म अभिनेता ललित परिमू के साक्षात्कार का इस कार्य में महत्वपूर्ण योगदान है। एन॰एफ॰ए॰आई॰ पुणे की पुस्तकालयाध्यक्ष, श्रीमती वीणा क्षीरसागर तथा उनके सहयोगी नीरज भांडवाले के सहयोग के बिना पुस्तकों की बड़ी संख्या में से सामग्री-संकलन का कार्य दुष्कर था, जो उनके सहयोग से सुगम हो गया। इसी विश्वविद्यालय के दो अग्रजतुल्य शिक्षक, अनुभव नाथ त्रिपाठी और डॉ॰ अप्रमेय मिश्र से बातचीत सामग्री के विश्लेषण में सहायक सिद्ध हुई। मैं उन सबके प्रति हृदय से आभारी हूँ। पुणे में मित्र अभिजीत का

सहयोग और प्रेम, सामग्री-संकलन के जटिल कार्य को उल्लासपूर्ण बना दिया। मित्र श्याम सिंह, अनुजतुल्य मित्र विक्रम कुमार सिंह, राहुल त्रिपाठी, हरिओम कुमार और वैभव कुमार ने भी इस कार्य में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग किया है। वे सब मेरे चिरस्नेह के भागी हैं। संपूर्ण शोधकार्य मेरे लिए अत्यंत श्रमसाध्य रहा, पर विषय की रोचकता और ज्ञानक्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाने की आकांक्षा ने मेरा उत्साह बनाये रखा। मुझे विश्वास है कि यह अध्ययन सिनेमा और नाटक से जुड़े लोगों के अतिरिक्त सामान्य अध्येता के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा।

– शोधकर्ता